8 अध्याय

संगम काल

इस अध्याय में आप सीखेंगे कि:

- संगम काल भारतीय प्रायद्वीप में क्या महत्व रखता है और इसका उद्भव और विकास कैसे हुआ।
- संगम काल की सामाजिक और आर्थिक स्थिति क्या और कैसी थी।
- संगम काल में विज्ञान तकनीक, कला साहित्य की कैसे बेहतर प्रगति सम्भव हो पायी।

संगम काल (Sangam Period)

भारतीय प्रायद्वीप के दक्षिणी छोर अर्थात् कृष्णा नदी के दक्षिण में तीन राज्यों में थे—चोल, चेर और पाण्ड्य। अशोक के द्वितीय शिलालेख में चोल, पाण्ड्य केरलपुत्र एवं सतीयपुत्र का उल्लेख है, जो साम्राज्य की सीमा पर बसते थे। संगम शब्द का अर्थ संघ, परिषद्, गोष्ठी अथवा तमिल कवियों का सम्मेलन है।

तालिका 8.1: विभिन्न संगम

संगम	अध्यक्ष	संरक्षक शासकों की संख्या	स्थल	सदस्यों की संख्या
प्रथम	अगस्त्य ऋषि	पाण्ड्य (89)	मदुरै	549
द्वितीय	तोलकाप्पियर	पाण्ड्य (59)	कपाटपुरम	49
तृतीय	नक्कीरर	पाण्ड्य (49)	उत्तरी मदुरै	49

चोल राज्य (Chola Dynasty)

यह राज्य पूर्वी, तमिलनाडु में पेन्नार तथा वेलार नदियों के मध्य स्थित था। इसका प्रतीक चिह्न बाघ था। प्रारम्भिक राजधानी उत्तरी मनलूर थी। चोलों की अन्य राजधानियाँ—उरैयुर, तंजावुर एवं पूहार थीं। उरूवप्पहरेंउलंजेत चेन्नि राजवंश का प्रथम शासक था। उसने अपनी राजधानी उरैयर में स्थापित की।

करिकाल प्रारम्भिक चोल राजाओं में सर्वाधिक महत्वपूर्ण शासक था। इसका काल लगभग 190 ई.पूं—माना जाता है। करिकाल का अर्थ था—जले हुए पैरों वाला व्यक्ति। उसने पुहार (कावेरी पत्तनम्) की स्थापना की और कावेरी नदी के किनारे 160 किमी लंबा बाँध बनवाया।

तन्जौर के निकट वेण्णि के युद्ध से उसे अत्यधिक प्रसिद्धि प्राप्त हुई। इस युद्ध में उसने चेर तथा पाण्ड्य राज्य के ग्यारह राजाओं के समूह पर विजय प्राप्त की। करिकाल सात स्वरों (संगीत) का ज्ञाता तथा वैदिक धर्म का अनुयायी था।

चेर राज्य (Chera Dynasty)

यह राज्य आधुनिक कोंकण, मालाबार का तटीय क्षेत्र, उत्तरी त्रवणकोर एवं कोच्चि तक विस्तृत था। चैर राजवंश का प्रतीक चिह्न धनुष था। उदयन जेराल इस वंश का शासक था। कहा जाता है कि उसने 'महाभारत' के युद्ध

में भाग लेने वाले वीरों को भोजन करवाया था। उदयन जेरियल ने एक बड़ी पाठशाला बनवायी।

शेनागुट्टुवन को लाल चेर भी कहा जाता था, उसने उत्तर दिशा में चढ़ाई की और गंगा को पार किया। उसका यशोगान परणर कवि ने किया हैं। यह कौमार्य की देवी उपासना से संबंधित पतिनी संप्रदाय का संस्थापक था। अदिग इमान नामक चेर शासक को दक्षिण में गन्ने की खेती प्रारंभ करने का श्रेय दिया जाता है। नेदुनजेराल आदन ने मरन्दै को अपनी राजधानी बनाया। उसने इमयतरम्बन की उपाधि ग्रहण की जिसका अर्थ होता है हिमालय तक सीमा वाला।

पाण्ड्य राज्य (Pandya Dynasty)

पाण्ड्य राज्य प्रायद्वीपों के सुदूर दक्षिण और दक्षिण-पूर्वी भाग में था मदुरै इसकी राजधानी थी। इसका प्रतीक चिह्न कार्प (एक प्रकार की मछली) था। मेगास्थनीज ने पाण्ड्य राज्य का उल्लेख 'माबर' नाम से किया है। यह राज्य मोतियों के लिए प्रसिद्ध था। यहाँ स्त्रियों का शासन था।

पाण्ड्य शासक नेडियोन ने पहरूली नामक नदी को अस्तित्व प्रदान किया तथा समुद्र पूजा भी प्रारंभ कराई। पाण्ड्य शासकों में सबसे विख्यात नेंडुजेलियन था। उसकी प्रसिद्धि तलैयालंगनम के युद्ध में विजय के परिणामस्वरूप हुई। पत्तुपातु में नेंडुजेलियन के जीवन का विवरण मिलता है। नेंडुजेलियन ने रोमन सम्राट ऑगस्टस के दरबार मे अपना दूत भी भेजा था। संगम कालीन कवियों नक्कीर, कल्लादनार एवं मागुडिमरूदन को संरक्षण प्रदान किया। नेंडुजेलियन के बाद उसक छोटा भाई कोरकै गद्दी पर बैठा। उसने 'सती कण्णगी' के सम्मान में विशाल उत्सव आयोजित करवाया।

प्रशासनिक व्यवस्था

संगमकालीन प्रशासन राजतन्त्रात्मक एवं वंशानुगत था। समस्त अधिकार राजा में निहित थे जो प्रजा को सन्तान के रूप में मानता था। राज्य का सर्वोच्च न्यायालय राजा की सभा (मनरम) होती है। राजा का जन्म प्रतिवर्ष मनाया जाता था, जिसे पेरूनल कहते थे।

राज्य मण्डलों मे विभाजित था। मण्डल नाडू या जिला में तथा नाडू उर या गावँ में विभाजित था। समुद्रतटीय कस्बों को पतिनम्, बड़े गाँव पेरूर, छोटे गाँव तथा पुरानें गाँव मुडूर कहलाते थे। मंत्री (अमैईयच्चार), पुरोहितार (पुरोहितार), सेनापति (सेनापतियार), दूत (दूतार), गुप्तचर (ओर्रार) प्रमुख अधिकारी थे।

संगमकालीन शासकों के पास पेशवर सैनिक होते थे। सेना की अग्र टुकड़ी तुसी और पिछली टुकड़ी कुलै कहलाती थी।

सेना प्रमुख को एनाडि की उपाधि दी जाती थी। युद्ध में मारे सैनिको की पाषाण मूर्तियाँ स्मारक स्वरूप बनाई जाती थीं।

आर्थिक स्थिति

संगमकालीन अर्थव्यवस्था सुचालित तथा पूर्णतया: आत्मनिर्भर थी। सामान्य लोग अधिकांशत: कृषक अथवा पशुपालक, शिकारी तथा मछुवारे थे। समृद्ध और शक्तिशाली वर्ग में तीन प्रकार के लोग थे—वेतर, वेलिर और वेल्लार। संगम साहित्य में व्यापारी वर्ग को वेनिगर कहा गया है। अधिकांश व्यापार वस्तु विनियम द्वारा होता था। बाजार को अवनम के नाम से जाना जाता था, यह लेन -देन का एक केंद्र होता था।

पेरिप्लस ऑफ इरिथ्रियन सी के अनुसार, टिंडिस, मुजरिस, नेलसिंडा, नौरा पश्चिमी तट के प्रमुख बन्दरगाह थे। चोल राज्य में पुहार (कावेरी पट्टनम), पाण्ड्य राज्य में शालियूर तथा चेर राज्य में कोर्कई प्रमुख बंदरगाह थे। कोरोमण्डल समुद्रतट पर अरिकमेडु प्रसिद्ध बंदरगाह था।

आयात की जाने वाली मुख्य वस्तुएँ थीं—सिक्के (सोना-चाँदी) पुखराज महीन कपड़े, छपे वस्त्र, सुरमा, शीश, टिन ताँबा एवं शराब आदि। निर्यात की जाने वाली वस्तुओं में प्रमुख थीं—काली मिर्च, मोती, हाथी दाँत, रेशमी वस्त्र, नीलमणि, हीरे, मसाले, सूती-वस्त्र आदि। प्रथम शताब्दी ई. में रोम के साथ व्यापार तमिलों के लिए इतना अधिक लाभप्रद था कि पाण्ड्य नरेश ने रोमन नरेश ऑगस्टस का सहयोग प्राप्त करनें कें लिए उनकें पास दो दूत भेजे थे।

सामाजिक स्थिति

संगम युग चार वर्णों में विभक्त था। ये वर्ण थे—अरसर (शासक), अण्डनर(ब्राह्मण) वेनिगर (वणिक) तथा वेल्लार या वेलिर (किसान)। यह वर्ण व्यवस्था आर्य युगीन वर्ण व्यवस्था से भिन्न थी। तमिल भूमि में ब्राह्मण का दर्शन सबसे पहले संगम युग में होता है। इस युग में तीव्र सामाजिक विषमता का बोध होता है। तोलकाप्पियम में तमिल समाज के तीन वर्णो में विभाजन का उल्लेख मिलता है। विवाह को आर्यों द्वारा एक संस्कार के रूप में अपनाया गया। अस्पृश्यता तथा दास-प्रथा का भी प्रचलन था।

वेल्लार (धनी किसान); उणवार (साधारण हलवाहा); कडैसियर (भूमिहीन मजदूर); अरसर (शासन वर्ग); पुलैयन (रस्सी बनाने वाली जाति); मलवर (डाका डालने वाला); एनियर (शिकारियों की जाति); परत्तियर (गणिका); पुलैयन (रस्सी की चारपाई का निर्माता); वेनिगर (वणिक या व्यापारी वर्ग); कणिगैचर (नर्तकी); अण्डनर (ब्राह्मण); एवं (मजदूर कृषक वर्ग) सामाजिक व्यवस्था कें प्रमुख अंग थे।

धार्मिक स्थिति

संगम युग में धर्म का संबंध कर्मकाण्डों और कतिपय आध्यात्मिक अवधारणाओं से था। उनके कर्मकाण्ड का संबंध जीवात्मावादी तथा मानरूपी देवपूजा के विविध रूपों में था। पुनर्जन्म, वीरपूजा, पितृपूजा का सम्पूर्ण दर्शन मृत्यु से संबंधित था। जीवात्मावादी तमिल संगम धर्म का एक प्रमुख अंग है और इसमें प्रस्तर, जल, नक्षत्र और ग्रहों की पूजा शमिल थी।

वैदिक संस्कृति को दक्षिण भारत में पहुँचाने का श्रेय अगस्त्य ऋषि को दिया जाता है। संगम युग में दक्षिण मे धर्म का प्रचलन हो चुका था। दक्षिण भारत में मुरुगन की उपासना सबसे प्राचीन है। बाद में मुरुगन का नाम सुब्रह्मण्यम् भी मिलता है और स्कन्द कार्तिकेय के साथ इस देवता का एकीकरण होता है। मुरुगन का प्रतीक है—मुर्गा (कुक्कुट)।

तालिका 8.2: विभिन्न प्रदेशों सें जुड़े देवता

क्षेत्र	देवता	निवासी
कुरुन्जि (पर्वत)	मुरुगन	कुरुवर (शिकारी)
पल्लै (निर्जन स्थल)	कोरनाबाई	मरवर (योद्धा)
मुल्लै (जंगल)	मेयन (विष्णु)	कुरुम्बर (गड़रिए)
मरुदम (जुते क्षेत्र)	इन्द्र	उलवर (कृषक)
नेयतल (समुद्रतट)	वरूण	पटदावर (मछुवारे)

संगम साहित्य

तमिल की प्रचीनतम रचनाओं को संगम साहित्य कहते हैं। संगमकालीन रचनाओं को दो वर्गों में विभाजित किया जाता है—अगम (प्रेम संबंधी) तथा पूरम (राजाओं की प्रंशसा) तमिल प्रदेश के लोग ईस्वी के आंरभ के पहले से ही लिखना जानते थे। ब्राह्मी लिपि में लिखे गए 75 से भी अधिक छोटें-छोटे अभिलेख प्राकृतिक गुफाओं विशेषकर मदुरै प्रदेश में पाए गए हैं।

ऐत्तुथोगई (आठ संग्रह ग्रंथ,) पत्तुपतु (दस गीतों का संग्रह) तथा पदितपतु (चेर शासकों का शौर्य विवरण) प्रमुख संगम साहित्य है। तोल्लकापियम की रचना तोल्लकापियर ने, शिलप्पादिकारम् की इलंगोआदिगल ने, मणिमैखलै की सीतलै सत्तनार ने, जीवक चिन्तामणि की तिरूक्तदेवर ने, 'तिरूक्कुराल' की तिरूवल्लुवर ने, अहनानुरु की रूद्रश्रमण ने तथा एनगुरूनूर की किलार द्वारा की गई।

अध्याय सार संग्रह

- माना जाता है कि: संगम साहित्य की रचना 300 ई.पू. के आस-पास की गई।
- संगम साहित्य में प्रेम विषयक काव्य संग्रह को 'अकम' कहा जाता है।
- चोल शासक करिकाल ने पुहार बंदरगाह का निर्माण करवाया था।
- संगम काल में ग्राम प्रशासन को अम्बलम् कहा जाता था।
- संगम साहित्य के अंतर्गत प्रसिद्ध तमिल व्याकरण ग्रंथ 'तोल्लकापियम्' की रचना द्वितीय संगम के दौरान की गई थी।
- तृतीय साहित्य संगम के आचार्य नक्कीरर थे।
- संगम साहित्य में केवल चेर राजाओं के संबंध में विस्तार से उल्लेख है।
- संगम साहित्य मणिमेखलै से शवों को जलाने, दफनाने के रीति-रिवाजों का विवरण मिलता है।
- प्रथम संगम के आचार्य थे अगत्तियार या अगस्त्य जो उत्तर भारत से आर्य संस्कृति को दक्षिण भारत लेकर आए।
- संगम साहित्य में राजा की सभा के लिए 'नार्लेप' शब्द का प्रयोग मिलता है
- संगमकालीन समाज के मातृ सत्तामक होने का संकेत मिलता है। यद्यपि उच्च सैनिक वर्गों में सतीप्रथा के चलन का संकेत मिलता है।
- इस काल में राजकीय आय का प्रमुख स्रोत भू राजस्व था जिसे 'कदमई' कहा जाता था।
- संगम साहित्य वीरता से संबंधित रचनाओं को 'पुरम' कहा जाता है।
- संगम काल में शक्तिशाली सरदार 'वेलीर' कहलाते थे।
- संगम समाज में प्रचलित गंधर्व विवाह को तमिल में 'कलवु' कहा गया है।
- द्वितीय संगम कपाटपुरम नगर में आयोजित हुआ था।
- संगम काल में कर संग्राहक को 'वरियार' कहा जाता था।
- संगमयुग के धार्मिक जीवन में यज्ञों, श्राद्ध आदि का भी विशेष महत्व था। लोगों को भूत-प्रेत एवं जादू टोने में भी विश्वास था।
- संगम समाज में गाणिकाओं तथा नर्तकियों को सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था।
- संगम साहित्य में सत्ती प्रथा का स्पष्ट उल्लेख मिलता है।
- संगम समाज में ब्राम्हणों को 'अरसर' और 'क्षत्रियों' को 'उल्वर' कहा जाता था।
- संगमयुगीन सैन्य व्यवस्था में सेनानायक को 'एनाडी' कहा जाता था। एनाडी को राज्य में महत्वपूर्ण एंव सम्मानजनक स्थिति प्राप्त थी।